International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-04-2020; Accepted: 20-05-2020; Published: 06-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 43-44

ब्रज लोक संस्कृति

Manorama Devi
Post-Doctoral fellowship, PGDAV, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति–रिवाज, रहन–सहन, आचार–विचार, धार्मिक आस्था, विश्वास, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएँ, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, उड़ावा, शोक–श्रृंगार, आहार–विहार, भजन–कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है। लोककर्मः– जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे ब्रज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का हृदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वर्तमान समय में मथुरा जिले के समीपवर्ती प्रदेश को ब्रज के नाम से जाना जाता है। ब्रज शब्द का विस्तृत विवेचन 'ब्रज संस्कृति का पर्यायः गोपाल' खण्ड में देखिए। शूरसेन जनपद ब्रह्मर्णि देश के अन्तर्गत था। ब्रह्मर्णि देश के निवासियों के आचार–विचार व संस्कृति को आदर्श माना जाता था।

ब्रज संस्कृति के प्रधान तत्व निम्नलिखित हैं।

1. प्राकृतिक सौन्दर्य
   इसके अंतर्गत नदी, कूप, कुंड, पोखर और सरोवर/ताल–तलैया का समावेश है। गंगा–यमुना, वन, उपवन व सेवा कुन्ज......आदि।
2. कृषि
3. गो–गोपाल–गो–संबर्धन
4. पशु–पक्षी
5. उत्सव, त्यौहार, मेले आदि।
6. ब्रज संस्कृति के उपकरण– आचार–विचार, रहन–सहन, वेश–भूषा, कला–कौशल, आस्था–विश्वास आदि।
7. धार्मिक प्रवृति–कृष्ण संबंधित स्थानों की यात्राऐं, परिक्रमाएँ और धार्मिक स्थलों से तादात्म्य।[1]

ब्रज–संस्कृति का मूल है प्रेम तत्व। यही प्रेम तत्व ब्रज लोक जीवन की धुरी है, जिसके आगे–पीछे जीवन चक्र घूमता रहता है। प्रेम तत्व एक ऐसा तत्व है जो समय की सीमाओं में नहीं बँधता–प्रेम की गहराई, सागर की गहराई से ज्यादा गहरा–गम्भीर और हिलौरों से युक्त है। प्रेम के इसी साम्राज्य में भारतीय संस्कृति फली और फूली है और प्रेम की सरिता बनकर युगों–युगों से प्रवाहमान हो रही है। कृष्ण की भाव–भंगिमा में, राधा की मुस्कान में और गोपियों के घटों में प्रेम रस भरा हुआ था। कृष्ण भक्ति ने सम्पूर्ण देश के जीवन को स्पर्श किया। तभी तो कुटिया से लेकर राजमहलों तक कृष्ण पूजनीय बन गये। ब्रज भूमि भक्ति धारा का केंन्द्र है। गिरीश कुमार चतुर्वेदी के शब्दों में ''प्रेम की शक्ति विश्वास और आस्था में है। समर्पण और त्याग में हैं। एक दूसरे में आत्मसात होने में है। राधा कृष्णमयी हो गई और कृष्ण राधामय। राधिका कान्ह लौ ध्यान घरै तब कान्ह है राधिका के गुन गावे। यह ब्रज संस्कृति की ही प्रेम ध्वजा थी जो प्रत्येक भारतीय जनमानस में लहरा उठी थी। प्रेम की छुअन से बोझिल प्राण भी जीवनमय हो जाते है।''[2]

ब्रज लोक संस्कृति में प्रेम के साथ–साथ कर्म की भी प्रधानता है और यही कर्म तत्व हमारी ब्रज लोक–संस्कृति की आस्था है। ब्रज के नायक कृष्ण भी कर्म योगी थे। उन्होंने अपने जीवन में कर्म तत्व को ही प्रधानता दी है। राक्षसों का वध अपनी जन संस्कृति की रक्षा हेतु किया था। कृष्ण ने कर्म के महत्व को गीता के उपदेश द्वारा जन–जन तक पहुँचाया था। प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय वासुदेव शरण अग्रवाल ने एक बार अपने सारगर्भित भाषण में कहा था कि ''ब्रज संस्कृति मिलाने वाली सुधा है। ब्रज की प्रेम भक्ति–प्रधान संस्कृति ने सब प्राणियों के जीवन को रहने योग्य बनाया और मानव को मानव के प्रति श्रद्धा का पाठ पढ़ाया।''[3]

ब्रज लोक संस्कृति मूलतः कृषि प्रधान संस्कृति है। ब्रज संस्कृति हमेशा से प्रकृति की बाँहों में फली–फूली है। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति में ही भगवान के दर्शन किये। सूर्य, चन्द्रमा, नदी, वृक्ष..... आदि सभी की हम पूजा करते हैं। प्रकृति हमारी जननी है। हम सब उसी के हैं। वह हमारी माँ है, एक माँ ही ऐसी होती है जो अपनी संतान को सब कुछ दे सकती है। प्रकृति को पूजना भी महत्वपूर्ण माना गया है।

ब्रज लोक संस्कृति धर्म प्रधान संस्कृति है। यहाँ सभी धर्मों को आश्रय मिला है। ब्रज लोक–संस्कृति सनातन–वैष्णव–जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और इस्लाम सभी धर्मों का आदर करती है।

ब्रज लोक संस्कृति का आधार स्तम्भ सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् है। जो सत्य है वही शिव है और जो शिव है वही सुन्दर है। अर्थात यह सत्य ही परम ब्रहम है। शिव की भावना जन कल्याणकारी भावना है। जो सुन्दर है वही सर्वोपरि है। मन की सुन्दरता कण–कण को सुन्दर बना देती है। यह भी कहा जाता है कि ''सुन्दरता देखने वालों की आँखों में होनी चाहिए।'' धर्म दीपक की शिखा है जो हृदय और आत्मा को आलोकित करती है। ब्रजवासी श्री कृष्ण के सखा है। वह राधा रानी का गुलाम अपने को मानते है। आज भी ब्रजवासी जब आपस में मिलते है या अभिवादन करते हैं तो राधे–राधे कहते है।

मैं एक सत्य घटना लिख रही हूँ। 2017 में मैं नन्द गाँव की

लट्ठमार होली देखने गई थी। कोसी स्टेशन पर मैंने सन्तरे खरीदे। ऐक्सीडेन्ड की वजह से पैर में परेशानी थी और मैं छड़ी (स्टिक) के सहारे चल रही थी। सन्तरे लेने के बाद पास ही के ऑटो में बैठ गयी। स्टिक सन्तरे वाले की ठेली के पास रखी रह गयी। तीन पैर वाली स्टिक थी। नन्द गाँव बस स्टेन्ड पर उतरी तो मैं स्टिक देखने लगी। ऑटो में स्टिक रखी ही नहीं थी तो मिलती कहाँ से, मेरी बेटी भी साथ में थी, एक अध्यापिका और भी थीं। मैं बहुत दुःखी हुई कि अब मैं कैसे चलूँगी ? एक बाल काटने वाली की दुकान पर मैं बैठ गयी। मेरी बेटी और अध्यापिका बोलीं कि हम दूसरे ऑटो से कोसी स्टेशन पर जाकर सन्तरे वाले की ठेली पर देखते है। बाल काटने वाला किसी से फोन पर बात कर रहा था, इतना सुनकर फोन पर बात करते–करते बोला – औ कन्हैया इनकी स्टिक ढूँढ कर रख दैइयो। यह इतनी दूर से आयीं हैं। इनकी स्टिक स्टेशन पर छूट गई है। तू ढूँढ कर रख दइयौ जें जा रहीं हैं इनको दै दइयो। मैंने सोचा कि इस बाल काटने वाला का कोई जानकार व्यक्ति है जिससे यह कह रहा है। मेरी बेटी और अध्यापिका के चले जाने के बाद लगभग 40 मिनट बाद मैंने उससे कहा कि भैया आप एक बार फिर से फोन करके कह दो कन्हैया से मेरी स्टिक के लिए। दूसरी बार मैंने देखा कि उसने बिना फोन के एक बड़ा सा चित्र माखन खाते कन्हैया का लगा हुआ था। उससे कहा कि कन्हैया स्टिक मिल जानी चाहिए। ढूढ़ कर दे दइयों यह विचारी दूर से आईं हैं। मैं सब सुनकर दंग रह गई। मैंने कहा आपने किससे कहा क्योंकि फोन तो था ही नहीं, उसने कहा मैंने कन्हैया के पास खबर भेज दी है। आप निश्चित रहो आपकी स्टिक मिल जाएगी। उसी समय मेरी बेटी का फोन आया कि हमें स्टिक मिल गयी। हम आ रहे हैं। वह बोला कन्हैया ढूढ़ता क्यों नहीं हमारी इतनी बात नहीं मानेगा। वह हमारा मित्र ही तो है। मैं अचम्भे में रह गयी। वह कहने लगा कि मैडम हम पर कोई परेशानी होती है, तो हम कन्हैया को चिट्ठी लिख देते हैं। परेशानी दूर हो जाती है। मैंने कहा–भैया चिट्ठी में पता क्या लिखते हो। वह बोला–

गाँव छुई–मुई, जिला है ही नहीं
पोस्ट ऑफिस पाया ही नहीं
लेकिन कन्हैया के पास,
चिट्ठी पहूँच जाती है।

आज भी पूरा नन्द गाँव कृष्ण कन्हैया को अपना सखा ही मानते है और मित्र की तरह बातचीत करते हैं।

ब्रज लोक संस्कृति दूध, दही, माखन और मिश्री की संस्कृति है। ब्रजवासी प्रकृति की गोद में खेलते है। प्रकृति का दिया भोजन खाते हैं। मांस–मदिरा का ब्रज की संस्कृति में कोई स्थान नहीं। ब्रजवासी इतने भोजन प्रिय होते हैं कि भोजन पर पूरा गीत ही गाकर सुना देते हैं।

खुरचन की नींम, बरफिन की भीत बनाय देऊ
पेड़न के बुर्ज घर–घर चिनाय देऊ
पूरिन के बिछौना मोहन भोग के गलीचा बिछाय देऊ
जामे खजलन की किवार गुलदानों जड़ाय देऊ
मिश्री की तोप जामे नुकतिन के लडुआ चलाय देऊ
ऐसे ऐसे किले बनवाय अपने हाथन सौ लुटाय देऊ

ब्रजवासी भोजन–प्रिय होते है। इसलिए तो कहते है कि

"भोजन बिन भजन न होय गुपाला। यह लेयो अपनी कंठी माला।।

ब्रज लोक संस्कृति रागमय और कला प्रधान संस्कृति है। ब्रज संस्कृति ने संगीत के सप्त–स्वरों में अपने गोपाल की साधना की थी। लोक मानस ने भी अपनी सहज लोक धुनों से गोपाल की अराधना की। चित्र–रेखांकन करना यहाँ के लोक–जीवन की आम–बात है। मकानों पर आकृति बनाना, गऊओं पर रंगीन आकृति बनाना, मिट्टी के बर्तनों पर चित्रकारी बनाना, विवाह के अवसर पर दरवाजों पर बेल रखना ब्रज में सर्वत्र पाया जाता है। लोक गीत, देवी–देवताओं के लोकगीत, लोक भजन यही सब ब्रज लोक संस्कृति की आत्मा है। "ब्रज लोक संस्कृति वह श्याम घटा है जिसके जल से जीवन रूपी वर्षा होती है। मन के सूखे खेत हरे हो जाते हैं। मानस को छाँव मिलती है। मन को विश्वास मिलता है, भक्ति और आस्था मिलती है।" ब्रज संस्कृति को यदि एक कल्पवृक्ष की संज्ञा दी जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।[4]

सन्दर्भ–सूत्र

1. हर्ष नन्दिनी भाटिया, "ब्रज संस्कृति और साहित्य", पृ० 40
2. गिरीश कुमार चतुर्वेदी– ब्रज की लोक संस्कृति पृ० 41
3. वही, पृ० 41
4. वही, पृ० 47